

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट, जॉन एलियट, सत्र 2, वबन का विगवाम टू नैटिक, एमए [1646-1674]

© 2024 टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा जॉन इलियट, 1604-1690 भारतीयों के प्रेषित पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 2, वाबन विगवम, अक्टूबर 1646 से नैटिक 1650 से 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँव, 1674 है।

जॉन पर हमारे दूसरे सत्र में आपका स्वागत है इलियट, भारतीयों के धर्मदूत, 1604 से 1690 तक।

हमारे पहले सत्र में, हमने कुछ ऐसी बातों पर चर्चा की, जो उन्हें महत्वपूर्ण बनाती हैं। हमने देखा कि बोस्टन स्टेट हाउस के हॉल ऑफ फ्लैग्स में जॉन एलियट का एक भित्तिचित्र है, साथ ही साथ कांग्रेसेशनल लाइब्रेरी आर्काइव में, वास्तव में 14 बीकन स्ट्रीट पर जॉन एलियट की भारतीयों से बात करते हुए संगमरमर पर नक्काशी की गई है। उन्होंने पहली पुस्तक छपी, संयुक्त राज्य अमेरिका में छपी पहली पुस्तक, बे स्तोत्र पुस्तक, जो 1640 में छपी थी, जिसमें एलियट ने स्तोत्रों के लिए मीटर में अनुवाद में भाग लिया था।

बाद में, 1663 में, उन्होंने पूरी बाइबिल, 1180 पृष्ठों का, अमेरिका में छपने वाली पहली बाइबिल, हार्वर्ड विश्वविद्यालय की पहली ईट की इमारत, इंडियन कॉलेज के तहखाने में, अल्गोंकिन भारतीय भाषा में अनुवाद किया। हालाँकि, इसे 1698 में नष्ट कर दिया गया था, और ईटों का इस्तेमाल कहीं और किया गया था। इसलिए अब हम उनके जन्म और उसके बाद व्हिटफोर्ड, नाज़िंग में उनके बचपन और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उनके माता-पिता की मृत्यु से उनका पता लगाते हैं।

और फिर, अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, वह थॉमस हुकर के साथ चेम्सफ़ोर्ड के लिटिल बैडो में चले गए, जो शुरुआती प्यूरिटन में से एक थे, फिर हुकर, लगभग 1630 या उसके आसपास, हॉलैंड और फिर अमेरिका चले गए और कुछ समय के लिए बोस्टन में बस गए। और फिर हुकर ने हार्टफ़ोर्ड, कनेक्टिकट की स्थापना की, और कनेक्टिकट के पहले गवर्नर बने। जॉन इलियट ने फिर लगभग 1631 में बोस्टन का रुख किया।

वहाँ एक पादरी गायब था जो अपनी पत्नी को अमेरिका आने के लिए मनाने के लिए वापस गया था, जॉन विल्सन। जॉन इलियट ने बोस्टन में पहले चर्च का पादरी पद संभाला, जो कॉमनवेल्थ स्ट्रीट पर बोस्टन गार्डन के ठीक बाहर था। और वह चर्च एक साल तक उनके पास रहा।

वे चाहते थे कि वह यहीं रहे और उन्होंने कोशिश की, आप जानते हैं, उन्हें अपने शिक्षक के रूप में रहने के लिए राजी किया, तब भी जब जॉन विल्सन वापस आए, लेकिन उन्होंने नाज़िंग के लोगों से वादा किया था कि मूल रूप से उन्हें वापस आना ही होगा और इसलिए, उन्होंने कहा कि वह उनके पादरी होंगे। नाज़िंग, उनके बचपन के चर्च और उनके परिवार के कई लोग बोस्टन और

फिर रॉक्सबरी चले गए। इसलिए, इलियट ने जो किया वह यह था कि वह एक साल तक वहाँ प्रचार करने के बाद बोस्टन से चले गए, और वे रॉक्सबरी चले गए।

उनके पास वहाँ एक पादरी था, थॉमस वेल्ड, जो एक वरिष्ठ पादरी था, इलियट से नौ साल बड़ा था। और फिर इलियट मूल रूप से लगभग 12 वर्षों तक वहाँ एक शिक्षक था। उसकी होने वाली पत्नी वहाँ आई और उसने शादी कर ली, रॉक्सबरी चर्च में यह पहली शादी थी।

और उनके छह बच्चे थे। और फिर इलियट ने लगभग 12 साल तक रॉक्सबरी के चर्च पर ध्यान केंद्रित किया, जो रॉक्सबरी का पहला चर्च था। हमने आपको इसकी तस्वीरें और वीडियो भी दिखाए।

इस दूसरे सत्र में, इलियट यहाँ 1646 के बारे में बात करने जा रहे हैं। वे न्यूटन या नोनाथम में वाबन के विगवाम में जाएँगे, जैसा कि उस समय कहा जाता था। और वे मूल रूप से 1646 में भारतीयों को उनकी भाषा में उपदेश देने जा रहे हैं। तो, जाहिर है, उसके पास इसके लिए तैयार होने के लिए कुछ साल थे।

उनके पास मूल रूप से कोकोनेल नामक एक व्यक्ति था जो उन्हें सिखाता था और उनके घर में रहता था, और उन्होंने तब शायद बहुत कठिनाई से सीखा था, लेकिन वह बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्होंने सीखा और वैसे, अब उनकी उम्र 39, 40 साल है। इसलिए, 39 या 40 साल की उम्र में एक नई भाषा सीखना बहुत बड़ी उपलब्धि है।

तो, वह भाषा सीखता है, और फिर वह, जो हम आज इस सत्र में देखने जा रहे हैं, दूसरे सत्र में, हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि जॉन इलियट ने 1646 में वाबन के विगवाम से लेकर 1674 तक भारतीयों के साथ क्या किया, जब 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँव थे, जो मुख्य रूप से उसके काम और 1646 से 1674 तक की अवधि में एक हज़ार भारतीयों के धर्मांतरण का परिणाम था। तो, यह एक अद्भुत अवधि है। यह वह अवधि भी होगी जब वह बाइबिल का अल्गोंक्विन में अनुवाद करेगा।

तो, आप देख सकते हैं कि यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसके पास काम करने की एक मजबूत नैतिकता थी, कहने की ज़रूरत नहीं है। तो चलिए 14 में वाबन के विगवाम से शुरू करते हैं, या मुझे खेद है, 1646 में नोनाटॉम में, जो आज न्यूटन, मैसाचुसेट्स है। यहाँ एक वीडियो है जो मूल रूप से वाबन के विगवाम का स्थान और Google मानचित्र पर उसका स्थान दिखा रहा है।

यहाँ, आप देख सकते हैं कि वाबन का विगवाम मैसाचुसेट्स टर्नपाइक रूट 90 के दक्षिण में और न्यूटन क्षेत्र या चेस्टनट हिल क्षेत्र में रूट 95 के पश्चिम में था। यह वह जगह है जहाँ हम आपको वास्तव में इलियट मेमोरियल ड्राइव पर दिखाएंगे, जो उस क्षेत्र में इलियट के लिए छोड़े गए स्मारकों में से एक है। यहीं पर उन्होंने वाबन के विगवाम में अपना पहला उपदेश दिया था।

1646 में इस वाबन की विगवाम मीटिंग के पूर्वी हिस्से पर ध्यान दें, बाईं ओर शेफर्ड शब्द खुदा हुआ है और दाईं ओर गूकिन खुदा हुआ है। ये उनके दो दोस्त थे जिन्होंने इलियट के उपदेश के तहत भारतीयों के धर्मांतरण को देखने में बहुत समय बिताया। अब, नॉनटॉम का मतलब है

आनन्दित होना क्योंकि वे ईश्वर के वचन पर आनन्दित हुए, और ईश्वर ने अपने पश्चातापी पापियों पर आनन्दित हुए, ऐसा कहा जाता था।

वैसे, पहला उपदेश, एलियट ने अल्गोंक्विन में जो पहला उपदेश दिया था, वह डोरचेस्टर मिल क्षेत्र में दिया गया था, और मूल रूप से, यह विफल रहा। भारतीयों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई, बस मूल रूप से यही कहा गया कि उसने विफल किया। वैसे, वह यह जानता था।

हालाँकि, यह कुत्शामिकन, मुझे देखना है कि क्या मैं इसे सही ढंग से कह सकता हूँ, कुत्शामिकन मूल रूप से उस समय पहला ईसाई धर्मांतरित व्यक्ति था जब उसने डोरचेस्टर मिल्स में प्रचार किया था। वह एक सैचैम था, इसलिए यह एक बड़ी बात थी। हम कुछ ही मिनटों में उससे और अधिक देखने जा रहे हैं।

वाबन के विगवाम में पहली बैठक 28 अक्टूबर, 1646 को हुई थी, और यह न्यूटन में थी। मूल रूप से, उनके साथ चार लोग गए थे, और ये उनके दोस्त हैं जो अक्सर उनके साथ यात्रा करने वाले हैं। डैनियल गूकिन को बाद में भारतीय शहरों की निगरानी के लिए जनरल कोर्ट द्वारा नियुक्त किया गया था।

तो, उनका एक राजनीतिक पद होगा। थॉमस शेपर्ड कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में मंत्री थे। वे उस समय बहुत प्रभावशाली थे।

जॉन विल्सन, जो पादरी वापस आए, बोस्टन के पहले चर्च पादरी थे। वे भी वहाँ थे। तो थॉमस शेपर्ड, जॉन विल्सन, और डैनियल गूकिन ऐसे लोग थे जिनके साथ वे घूमते थे और इस नॉन्टम, मैसाचुसेट्स [आधुनिक सिल्वरलेक/न्यूटन], वाबन के विगवाम में उनके प्रचार के दौरान उनके काम को देखने के लिए बाहर आते थे।

उन्होंने दस आज्ञाओं पर उपदेश दिया, और उन्होंने यहजेकेल अध्याय 37, श्लोक नौ पर विडंबनापूर्ण ढंग से उपदेश दिया, जो सूखी हड्डियों का दर्शन है। फिर उन्होंने, उद्घरण, फिर उन्होंने मुझसे कहा, हवा के लिए भविष्यवाणी करो, उद्घरण समाप्त। और जब उन्होंने हवा के लिए भविष्यवाणी की, तो सभी लोगों ने चारों ओर देखा, और उन्होंने देखा, और यहाँ वाबन नाम का एक आदमी था, और वे सभी वाबन को घूरने लगे।

बाद में ही इलियट को पता चला कि वाबन के नाम का मतलब हवा है। और इसलिए वह कह रहा था, हवा के लिए भविष्यवाणी करो, सभी भारतीय लोग वाबन की ओर ऐसे देख रहे थे जैसे यह सीधे उसी की ओर हो। और इसलिए, यह एक आश्चर्यजनक बात थी कि इलियट ने इस अंश को चुना, और वाबन वहाँ था, हवा वहाँ थी, और उसने इस पर उपदेश दिया।

तो, यह अद्भुत था। उनका उपदेश एक घंटे और 15 मिनट तक अल्गोंक्विन भाषा में चला। उपदेश के बाद, एलियट, और यह, मुझे लगता है, एलियट को समझने की कुंजी में से एक था।

प्रवचन के बाद, उनके पास तीन घंटे का प्रश्न-उत्तर सत्र था। जॉन इलियट भारतीयों का इतना सम्मान करते थे कि उन्होंने उन्हें प्रश्न पूछने की अनुमति दी, और वे तीन घंटे तक उनके प्रश्नों से जूझते रहे। यह उनका रिवाज था।

वह अक्सर ऐसा करते थे। इसलिए, यह उन्हें सम्मानित करने का एक अद्भुत तरीका था। जब उनके पास सवाल होते थे, तो वह उन सवालों का जवाब देते थे और उनकी संतुष्टि के लिए उनका जवाब देने का प्रयास करते थे।

अब, कुछ सवाल हो सकते हैं, हम यीशु मसीह को कैसे जान सकते हैं? इससे एलियट को एक तरह से ठेस पहुंची क्योंकि उन्होंने कहा कि बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने से उन्हें एहसास हुआ कि उनकी भाषा में बाइबल नहीं है। और इसने उन्हें यह कहने के लिए प्रेरित किया, जब वे कहते हैं, मैं यीशु मसीह को कैसे जान सकता हूँ? उन्हें परमेश्वर के वचन को समझने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन उन्हें अपनी भाषा में परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है। और इसने उन्हें बाइबल को उनकी भाषा में अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया।

वैसे, उन्होंने 1661 में नया नियम लिखा, दो साल लगे, और फिर 1663 में पूरी बाइबल तैयार की, जिसे छापा गया। उनके सामने एक और सवाल आया कि क्या गोरे लोगों का भगवान भारतीय प्रार्थनाएँ सुनता है? आपका भगवान अंग्रेजी समझता है, लेकिन क्या वह वैम्पानोग अल्गोंक्विन समझता है? और इलियट ने मूल रूप से कहा, भगवान ने मुझे बनाया, भगवान ने अंग्रेजों को बनाया, भगवान ने आपको बनाया। वह आपके बारे में सब कुछ समझता है।

और इसलिए, वह आपकी भाषा में की गई आपकी प्रार्थनाओं को समझता है। वाबन खुद, जो एक तरह से एक प्रमुख और बहुत सम्मानित व्यक्ति हैं, ने कहा, हम उस पर कैसे विश्वास कर सकते हैं जिसे हमारी आँखें नहीं देख सकतीं? और एलियट ने उसे बताया, और उसने कहा, अरे, हम वाबन के विगवाम में हैं। यह विगवाम देखें? क्या रैकून ने यह विगवाम बनाया है? क्या लोमड़ियों ने यह विगवाम बनाया है? क्या हवा ने यह विगवाम बनाया है? नहीं।

आप विगवाम को देखते हैं और आप जानते हैं कि किसी ने इसे बनाया है। और भले ही आप यह नहीं देख सकते कि इसे किसने बनाया है, लेकिन आप समझते हैं कि यह विगवाम, उस व्यक्ति के काम के परिणामों को देखकर, आप जानते हैं कि किसी व्यक्ति ने इसे बनाया है। इसे लोमड़ियों ने नहीं बनाया है।

इसे बीवर ने नहीं बनाया। इसे किसी इंसान ने बनाया है। और इसलिए जब हम दुनिया को देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि इसे लोमड़ियों या यहां तक कि लोगों ने भी नहीं बनाया है।

हम ऐसा नहीं कर सकते। यह ईश्वर द्वारा बनाया गया है। इसलिए, हालांकि हम उसे नहीं देख सकते, हम उसकी कारीगरी देख सकते हैं, और वह मूल रूप से ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क का उपयोग करता है, जिसका उपयोग वर्षों से क्षमाप्रार्थी में किया जाता रहा है।

तो, यह अच्छा है। अच्छा, बढ़िया जवाब है। दूसरी मीटिंग में, इलियट हर बार वापस आए, मूल रूप से वे इसे हर दूसरे सप्ताह पखवाड़े कहते हैं।

इसलिए उन्होंने एक सप्ताह नॉनंटम या सिल्वरलेक/न्यूटन क्षेत्र में भारतीयों के साथ प्रचार किया। और फिर वह एक सप्ताह रॉक्सबरी में अपने घरेलू चर्च में प्रचार करेंगे। और फिर वह इस तरह आगे-पीछे, आगे-पीछे होते रहेंगे।

और उन्होंने इसे हर दूसरे सप्ताहांत में एक पखवाड़ा कहा। और इसलिए, वह, दूसरी रात जो वह वहाँ था, वह 12 नवंबर, 1646 को थी। और इस बार, उसने 10 आज्ञाओं पर फिर से उपदेश दिया: अपने पापों का पश्चाताप करो, भगवान से प्रार्थना करो और यीशु मसीह पर विश्वास करो, नरक से बचो, और स्वर्ग जाओ।

इस बार सवाल उठे। और अब सवाल यह है कि, आप देख सकते हैं, ऐसा कैसे होता है कि समुद्र का पानी खारा होता है और ज़मीन से आने वाला पानी ताज़ा होता है? दिलचस्प है। मुझे आश्चर्य है कि उसका जवाब क्या था।

और फिर वे फिर से पूछते हैं, स्ट्रॉबेरी मीठी क्यों होती है और क्रेनबेरी खट्टी? फिर से, यहाँ कुछ और सवाल हैं जो अधिक धार्मिक रूप से उन्मुख हैं। और भारतीयों ने ये पूछा: हमारे छोटे बच्चे मरने के बाद कहाँ जाते हैं? उन्होंने पाप नहीं किया है। और इसलिए उन्होंने वही सवाल पूछा जो हममें से कई लोग पूछते हैं: हमारे बच्चों का क्या होता है जब वे मर जाते हैं जब वे वास्तव में पाप नहीं जानते हैं, और वे इतनी कम उम्र में मर जाते हैं और उनके कई बच्चे मर गए?

जैसा कि मैं कहना चाहूँगा, एलियट के भी छह बच्चे थे। जॉन एलियट के भी छह बच्चे थे। वे उनमें से दो को छोड़कर बाकी सभी से ज़्यादा जीवित रहे।

उनके चार बच्चे उनसे पहले ही मर चुके थे। और यह उनके लिए बहुत दुख की बात है और एक माता-पिता के लिए यह वाकई बहुत मुश्किल है। और इसलिए, उन्होंने अपने चार बच्चों को मरते हुए देखा और उनके पास केवल दो ही बचे।

वह दो को छोड़कर बाकी सभी से ज़्यादा जीया। सवाल यह है कि भगवान ने शैतान को क्यों नहीं मारा जिसने सभी लोगों को इतना बुरा बनाया? भगवान के पास सारी शक्ति है, तो उसने शैतान को क्यों नहीं खत्म किया? एक और अच्छा सवाल। एलियट ने उनके साथ प्रार्थना करने पर ज़ोर दिया।

उन्होंने सब्बाथ पर भी जोर दिया। प्यूरिटन लोग सब्बाथ का पालन करने में बहुत विश्वास करते थे। तो क्या उन्होंने सब्बाथ का पालन किया? खैर, भारतीयों में से एक ने जवाब दिया कि भारतीयों के लिए यह सबसे आसान है। हम कभी किसी दिन काम नहीं करते।

एक भारतीय ने कहा, "अगर हम इसमें मदद कर सकते हैं तो यह एक तरह का हास्य है।" यहाँ एक परेशान करने वाला सवाल है।

यहाँ एक बहुत ही भयावह प्रश्न है। अंग्रेज़ों को इस देश में रहते हुए 27 साल हो गए हैं, फिर भी उन्होंने भारतीयों को ईश्वर को जानना क्यों नहीं सिखाया? यह बहुत ही भयावह प्रश्न है।

यहाँ एक बूढ़े व्यक्ति का एक और दुखद सवाल है: एक बहुत बूढ़े व्यक्ति ने यह सवाल पूछा। उसने पूछा कि क्या इतने बूढ़े व्यक्ति के लिए, जो मृत्यु के करीब था, पश्चाताप करने और ईश्वर की तलाश करने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। और एलियट और उसके दोस्तों ने मूल रूप से जवाब दिया, क्या आपको मैथ्यू 20 में समान मजदूरी का दृष्टांत याद है? मेरा मानना है कि यह है, जहाँ सभी को समान वेतन मिलता था, लेकिन फिर भगवान ने 11वें घंटे में कुछ लोगों को काम पर रखा, और उन्हें समान वेतन मिला।

और इसलिए, बूढ़े आदमी, उन्होंने बूढ़े आदमी को समान वेतन के दृष्टांत से सांत्वना दी और कहा, नहीं, तुम अच्छे हो, यार। तुम बूढ़े हो, तुम बूढ़े हो, लेकिन तुम अच्छे हो। पश्चाताप करो और यीशु पर विश्वास करो, खासकर तुम।

और कुछ, हम उन भारतीयों से क्या कहेंगे जो हमसे कहते हैं, भगवान से प्रार्थना करने और ईसा मसीह पर विश्वास करने से आपको क्या मिलता है? और इसलिए कुछ भारतीयों ने कहा, अच्छा, इससे क्या लाभ है? आप भगवान से प्रार्थना करते हैं, और मैं भगवान से प्रार्थना नहीं करता, और यह आपके लिए उतना ही अच्छा नहीं होता जितना कि मेरे लिए होता है। आपके बच्चे मेरे बच्चों की तरह नंगे घूमते हैं। हमारा मक्का आपके जितना ही अच्छा है।

हमें तुमसे ज़्यादा मज़ा आता है। अगर हम देखते कि तुम्हें भगवान से प्रार्थना करने से कुछ मिलता है, तो हम भी ऐसा ही करते। जबकि इससे क्या फ़ायदा है? इलियट ने अपनी उँगलियों, अपनी छोटी उँगली और अपने अंगूठे से जवाब दिया।

और उन्होंने मूल रूप से कहा कि भगवान दो तरह के आशीर्वाद देते हैं। एक वो है जिसे मैं छोटी चीज़ें कहना चाहता हूँ। और फिर भगवान आपको बड़ी चीज़ें देते हैं।

तो, छोटी-छोटी चीज़ें मूल रूप से कपड़े, भोजन, बोरे, घर, मवेशी और सुख-सुविधाएँ होंगी। ये जीवन की छोटी-छोटी चीज़ें हैं। महान दया, अंगूठा, महान दयाएँ बुद्धि, परमेश्वर, मसीह, अनन्त जीवन, पश्चाताप और विश्वास का ज्ञान हैं।

ये आत्मा और अनन्त काल के लिए हैं। और इसलिए वह कहता है, आप उन्हें नहीं देख सकते, लेकिन बड़ी चीज़ें, जो वास्तव में मायने रखती हैं, वे चीज़ें हैं जिन्हें ईसाई धर्म संबोधित करता है। और वैसे भी, जवाब देते हुए, यहाँ एक पत्नी से एक है।

ठीक है। यह भी दिलचस्प है कि महिलाएँ भी सवाल पूछ रही हैं। वम्पास की पत्नी यह सवाल पूछती है: जब मेरे पति प्रार्थना करते हैं, प्रार्थना करने वाले भारतीय अगर मेरे पति प्रार्थना करते हैं और मैं कुछ नहीं कहती, और फिर भी मेरा दिल उनकी बात मानता है, तो क्या मैं प्रार्थना करती हूँ? और वह कताई करना और कई अन्य काम सीख रही थी।

और 1647 में, यह उसके मरने के एक साल बाद की बात है। एलियट ने उससे मुलाकात की और उसके साथ प्रार्थना की और उसे बताया, और उसने उससे कहा कि वह अभी भी भगवान से प्यार करती है, हालाँकि उसने उसे बीमार कर दिया है, और जब तक वह जीवित है, तब तक उससे

प्रार्थना करने का संकल्प लिया है। वह मरने के लिए तैयार थी और उसे विश्वास था कि वह जीने के लिए जाएगी, वहाँ से जाएगी, और मसीह में भगवान के साथ खुशी से रहेगी।

वह पहली वयस्क भारतीय थीं, जिनकी मृत्यु इलियट की देखरेख में हुई। ठीक है। तो इलियट ने इन भारतीयों को उपदेश दिया, और वे सवाल और ऐसी ही बातें पूछ रहे थे।

सत्यम समस्या, सत्यम समस्या और पावो समस्या तब और स्पष्ट हो गई जब प्रमुख सत्ता खो रहे थे, क्योंकि पावो या पुजारी सत्ता खो रहे थे। फिर, एलियट जो कर रहा था उसका विरोध और बढ़ गया। भारतीयों के दौरे के बाद एलियट के विश्लेषण में, एलियट ने यह उद्धरण कहा: यह बहुत संभव है कि अगर कभी भगवान इन मूल निवासियों में से किसी को भी धर्मांतरित करते हैं, तो वे पाप के लिए बहुत शोक करेंगे।

और यही हुआ। और परिणामस्वरूप, मसीह से और भी अधिक प्रेम करो। उनकी सबसे पहली चीजों में से एक, और मैंने इसे वेब पर डाला, बहुत सुंदर है।

इसे पश्चाताप के आंसू, पश्चाताप के आंसू कहा जाता है, और यह उन शुरुआती धर्मांतरित भारतीयों की कहानी बताता है, जो अपने पापों का पश्चाताप करते हैं और आंसू बहाते हुए और रोते हुए अपने पापों को स्वीकार करते हैं और मसीह से प्रार्थना करते हैं और यीशु मसीह के सुसमाचार को अपनाते हैं, यह खुशखबरी, यह खुशखबरी कि मसीह उनके पापों के लिए मरा। यह बहुत ही सुंदर है। तीसरी बैठक, फिर से, पखवाड़े, 26 नवंबर, 1646 को आयोजित की गई थी।

और वहां विषय शैतान का प्रलोभन था। अब यह वास्तव में बहुत अच्छा रहा क्योंकि उन्हें समझ में आ गया कि उनके पास एक तरह का अच्छा भगवान और एक बुरा भगवान है। और इसलिए वहां यह संघर्ष, वे इसे काफी अच्छी तरह समझते हैं।

वाम्पास, वह व्यक्ति जिसकी पत्नी मर गई थी, अपने बच्चों को रॉक्सबरी में इलियट के पास ले आया। वाम्पास अपने बच्चों को लेकर रॉक्सबरी आया और इलियट से पूछा कि क्या वह उसके बच्चों को शिक्षित कर सकता है। तो आप देख सकते हैं कि वे इस जॉन इलियट पर किस तरह भरोसा करते थे।

यह एक आश्चर्यजनक बात थी। वे वास्तव में उस पर भरोसा करते थे। नेता, वाबन ने भी तब शुरुआत की, वाबन इस नॉनंटम, सिल्वरलेक/न्यूटन क्षेत्र में एक नेता था।

और मूल रूप से, दस आज्ञाएँ वास्तव में बहुत बड़ी थीं, प्यूरिटन और ऐसी ही अन्य चीजें। फिर वाबन ने नियम बनाने शुरू किए जिनका भारतीयों को पालन करना चाहिए। और उसने इन नियमों के लिए उन्हें जुर्माना लगाया।

उनका तीसरा नियम था कि पत्नी की पिटाई नहीं की जाएगी, केवल एक गंभीर अपराध को छोड़कर। अपराधी के हाथ पीछे की ओर बांध दिए जाएंगे और उसे न्याय के स्थान पर ले जाकर कड़ी सजा दी जाएगी। दूसरे शब्दों में, अब पत्नी की पिटाई बंद हो गई है।

और यह आपको बताता है, बहुत से लोग कहते हैं, ठीक है, ईसाई धर्म, आप जानते हैं, हमें मूल निवासियों को मूल निवासी ही रहने देना चाहिए। खैर, हाँ, ये लोग अपनी पत्नियों को पीटते हैं और इस तरह की बातें करते हैं। ईसाई धर्म आता है, और वे अपनी पत्नियों को पीटना बंद कर देते हैं।

क्या यह अच्छी बात है या बुरी? खैर, आप अपनी संस्कृति बदलें। मुझे अच्छा लगता है कि आज के शिक्षाविद अपनी कुर्सियों पर बैठकर इस बात पर बहस करते हैं कि उन्हें उस समय क्या करना चाहिए था। और फिर भी ये लोग अपने एयर-कंडीशन्ड दफ्तरों में बैठे हैं, इस तरह के असली काम के बारे में कुछ नहीं जानते, लोगों के साथ काम कर रहे हैं और अपनी संस्कृतियों से जूझ रहे हैं।

सातवाँ नंबर, वे सभी पुरुष जो लंबे बाल रखते हैं, उन्हें वह पाँच शिलिंग का भुगतान करेगी। और इसलिए मूल रूप से, उनमें से बहुत से लोग ईसाई धर्म और संस्कृति के इस मिश्रण के रूप में अपने बाल कटवाते हैं। और वैसे भी, तब वाबन के नियम दिलचस्प थे।

चौथी बैठक 9 दिसंबर, 1646 को हुई। तब भारतीयों ने अपने बच्चों को अंग्रेजों से शिक्षा दिलवाने की पेशकश की और कहा कि वे इसके लिए कुछ भी नहीं दे सकते। इसलिए इलियट बच्चों को धर्मशिक्षा देने के पक्ष में थे।

यह उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। और इसलिए, वह इंग्लैंड से सहायता प्राप्त करने जा रहे हैं ताकि वास्तव में स्कूल मास्टर और शिक्षिकाओं को बच्चों को मसीह का मार्ग सिखाने के लिए सहायता प्रदान की जा सके। तो, सर्दी शुरू हो गई।

इस बीच, बर्फ और बर्फ और सर्दी के मौसम में, जॉन इलियट हर दूसरे हफ्ते अपने घोड़े पर सवार होकर जंगल के बीच से ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलकर वाबन के केबिन तक पहुँचते रहे। और ज़्यादा से ज़्यादा भारतीय इंतज़ार कर रहे थे। और इसलिए मूल रूप से, वहाँ ज़्यादा से ज़्यादा भारतीय हैं; वह उनसे उनकी ही भाषा में बात कर रहे हैं।

उन्होंने भारतीयों के बीच सुसमाचार की सफलता को पिता द्वारा पुत्र को दिए गए ईश्वर के वादे की पूर्ति के रूप में देखा। भजन संहिता के दूसरे अध्याय में पिता पुत्र से कहता है, मुझसे मांगो, और मैं तुम्हें अन्यजातियों को तुम्हारी विरासत के रूप में और दुनिया के सबसे दूर के क्षेत्रों को तुम्हारे अधिकार में दे दूंगा। और उन्होंने सोचा कि यह पिता भारतीयों के धर्म परिवर्तन के बारे में मसीह से बात कर रहा था।

अब, कुत्सामिकन, यहाँ एक कहानी है कि क्या हुआ। वह लड़के को धर्मशिक्षा पढ़ा रहा था, और उसे डांटा गया। लड़के को डांटा गया क्योंकि उसने यह नहीं कहा, अपनी माँ का आदर करो।

वह कहता था, अपने पिता का आदर करो, लेकिन फिर वह यह कहना छोड़ देता था, अपनी माँ का आदर करो। उन्होंने लड़के को डांटा। उद्धरण, इसलिए, अगले व्याख्यान के दिन, उन्होंने कुत्सामिकन को अपने पापों को स्वीकार करके बेटे के सुधार के लिए रास्ता तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इसलिए, वे पिता के पास आए, और पिता वास्तव में परेशान था क्योंकि लड़का कहता था, अपने पिता का सम्मान करो, लेकिन अपनी माँ का सम्मान मत करो। इसलिए, पिता परेशान हो गया। इसलिए, बोस्टन के पहले चर्च से एलियट और जॉन विल्सन ने इस कुटुम्बिकन लड़के से संपर्क किया, और उन्होंने कहा, आप चाहते हैं कि आपका बेटा उस बात का पश्चाताप करे? वे क्यों नहीं जानते कि इस आदमी को खुद भी समस्याएँ थीं?

आप अपने बच्चे के सामने अपने पापों को स्वीकार क्यों नहीं करते और देखते हैं कि क्या होता है? और इस तरह ईमानदारी से चेतावनी दिए जाने पर, उसने ईमानदारी से अपने अपराधों को स्वीकार किया और कड़वे रूप से विलाप किया। अंत में, लड़के ने हार मान ली और सबसे विनम्र स्वीकारोक्ति की और अपने पिता का हाथ पकड़कर अपनी क्षमा का व्यवहार किया।

उसके अपमान ने उसके माता-पिता को इतना परेशान कर दिया कि वे फूट-फूट कर रोने लगे। इसलिए कुटुम्बिकन ने एलियट को बताया कि सकाम उससे नाराज़ थे क्योंकि वे अपना सीमा शुल्क राजस्व खो रहे थे। और वह भी नाराज़ था। वह उन सरदारों में से एक था।

और इसलिए उन्होंने उन्हें बताया कि अन्य प्रमुख एलियट और अन्य चीज़ों से परेशान हो रहे थे। अब, मैं एलियट के मिशनरी कार्य के लिए समर्थन के बारे में बात करना चाहता हूँ। और एलियट इन प्रकार के लोगों के समर्थन के बिना इसे इतनी प्रभावी ढंग से नहीं कर सकता था।

नॉन्टम में आने वाले आगंतुकों में थॉमस शेपर्ड जैसे लोग शामिल थे, जिनके बारे में हमने बताया कि वे कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स से थे। वे एक पादरी थे। उनकी मृत्यु लगभग 1649 में हुई।

बोस्टन के पहले चर्च के जॉन विल्सन, जॉन विल्सन, जो इलियट के पादरी थे, की मृत्यु लगभग 1667 में हुई। मि. डंस्टर हार्वर्ड कॉलेज के अध्यक्ष थे। वे भारतीयों के पाप स्वीकार करने और ऐसी ही अन्य बातें सुनने के लिए भी आते थे।

और फिर वास्तव में इसमें शामिल है। हार्वर्ड उस भारतीय कॉलेज से जुड़ा था जिसकी स्थापना तब हुई थी। यहीं पर इलियट बाइबिल छपी थी, साथ ही कई अन्य चीज़ें भी यहीं छपी थीं।

इलियट के मित्रता नेटवर्क को मैं तीन समूहों में विभाजित करना चाहता हूँ: सलाहकार, तीन सलाहकार, तीन साथी और इंग्लैंड में तीन समर्थक। ठीक है।

तो, ये तीन गुरु हैं, जिन लोगों से एलियट को मदद मिली, उनमें थॉमस हुकर भी शामिल हैं। और मुझे लगता है कि यहीं पर उनका धर्मांतरण का अनुभव हुआ। और थॉमस हुकर एक प्यूरिटन के रूप में बोस्टन और फिर हार्टफोर्ड आए और कनेक्टिकट के पहले गवर्नर बने, एक प्यूरिटन नेता, थॉमस हुकर।

थॉमस मेयू, हमने कहा कि वह मार्था के वाइनयार्ड में एलियट से कुछ चार साल पहले भारतीय काम कर रहे थे। उन्होंने इसे बहुत सफलतापूर्वक किया था, उन्हें उनकी भाषा में उपदेश दिया

था, और बहुत सक्षम थे। वह एलियट की तरह व्यवस्थित नहीं थे, और एलियट इन गांवों और चीजों के साथ थे, लेकिन वह मार्था के वाइनयार्ड में बहुत प्रभावी थे।

और उनके बच्चे, मेह्यू के बच्चे, फिर उनके बाद, थॉमस मेह्यू, और फिर उनके बाद के बच्चे सौ साल से ज़्यादा, 150 साल तक भारतीयों के साथ काम करते रहे। तो, यह एक अद्भुत व्यक्ति है, थॉमस मेह्यू। और इसलिए उन दोनों ने भारतीयों के लिए इस दृष्टिकोण को साझा किया।

मेह्यू ने इसे मार्था के वाइनयार्ड में किया। इलियट ने इसे नैटिक, मैसाचुसेट्स क्षेत्र में किया। थॉमस वेल्ड नौ साल बड़े थे, और वे रॉक्सबरी के पहले चर्च में वरिष्ठ पादरी थे।

इलियट शिक्षक थे और थॉमस वेल्ड मुख्य मंत्री थे। और इसलिए उनके तीन गुरु थे, हुकर, मेह्यू और वेल्ड। उनके साथी, वे लोग जो उसी स्तर के थे, वे बस, वे वाबोन के विग्वम में कुछ बैठकों में आए थे।

कैम्ब्रिज के थॉमस शेफर्ड और रिचर्ड गूकिन ने 1687 में भारतीय गांवों पर कब्ज़ा कर लिया; उनकी मृत्यु हो गई। और वास्तव में, गूकिन का नाम, जब मैं आपको नॉनंटम या न्यूटन में वह चीज़ दिखाता हूँ, तो उनके पास वास्तव में इसके लिए एक स्मारक है। आप एक तरफ शेफर्ड का नाम और दूसरी तरफ गूकिन का नाम देख सकते हैं, और फिर एलियट को श्रद्धांजलि।

तो, शेफर्ड और गूकिन के लिए, और फिर एलियट के लिए, श्रद्धांजलि एलियट को है। तो ये उनके कुछ दोस्त हैं। जॉन विल्सन, जो बोस्टन के पादरी थे, एलियट के अच्छे यात्रा मित्र थे।

उनके मित्र थॉमस शेफर्ड, रिचर्ड गूकिन और जॉन विल्सन थे। अब, इंग्लैंड में उनके तीन समर्थक थे, और ये आलोचक थे। एडवर्ड विसलो ने मूल रूप से थॉमस मेह्यू और जॉन इलियट की कहानियों को लिया और इंग्लैंड में उन कहानियों को प्रचारित किया।

उसके आधार पर, इंग्लैंड में लोगों को एलियट द्वारा किए जा रहे महान कार्य के बारे में बताया गया। इसलिए, उन्होंने वास्तव में पश्चाताप के आंसुओं के आधार पर समर्थन जुटाया। और मैं कुछ अन्य पुस्तकों की सूची बनाने जा रहा हूँ, जो वास्तव में पुस्तकें नहीं हैं। वे 60, 50, या 90 पृष्ठों की होती हैं; उन्हें ट्रैक कहा जाता है।

वे इंग्लैंड में प्रकाशित हुए और फिर इलियट के लिए धन जुटाने का आधार बन गए, ताकि वे मूल रूप से भारतीयों को खेती करने के लिए औजार दे सकें। उनके पास खेती के औजार और अन्य चीजें नहीं थीं। और फिर उनके प्रधानाध्यापकों और प्रधानाध्यापिकाओं के लिए भी जो बच्चों को पढ़ाते थे, उन्हें भुगतान किया जाता था ताकि वे बच्चों को मुफ्त में पढ़ा सकें।

तो हाँ, जॉन एलियट द्वारा वाबोन के विग्वाम में भारतीय अल्गोंक्विन को उपदेश देने, बच्चों को उपदेश देने और अन्य बातों के लगभग छह महीने बाद, यह 1649 में हुआ, यह लगभग दो साल बाद, चार्ल्स I के वध में, लॉन्ग पार्लियामेंट ने न्यू इंग्लैंड में गॉस्पेल के प्रचार के लिए राष्ट्रपति और सोसाइटी को शामिल किया। इसलिए, न्यू इंग्लैंड में गॉस्पेल के प्रचार के लिए सोसाइटी इंग्लैंड में एक ऐसी सोसाइटी बन गई जो फंड जुटा सकती थी जिसने वास्तव में एलियट का समर्थन करने

में मदद की। अब, शक्ति के साथ, और मूल रूप से, उन्होंने लगभग 11,000 पाउंड जुटाए, जो उस समय एक आश्चर्यजनक राशि थी।

इलियट को तब सालाना 50 पाउंड की राशि मिली, एक वार्षिक वजीफा, 50 पाउंड प्रति वर्ष जिसने वास्तव में उसे राहत दी और उसके वेतन और इस तरह की चीजों में मदद की। और हाँ, शिक्षा के लिए। अब, वह व्यक्ति जो खत्म हो गया, उसका नाम रॉबर्ट बॉयल था।

और इसलिए, वह इंग्लैंड में समर्थकों में से दूसरे थे। हमारे पास एडवर्ड विसलो थे, जिन्होंने यह कहानी सुनाई कि इलियट भारतीयों के इंग्लैंड में धर्मांतरण की कहानी थे, एडवर्ड विसलो थे। लेकिन रॉबर्ट बॉयल एक दार्शनिक बुद्धिजीवी थे जो इंग्लैंड में गॉस्पेल के प्रचार के लिए सोसायटी के प्रमुख थे।

बॉयल ने तब देखा कि इलियट क्या कर रहा था और वास्तव में उसे समझ में आ गया कि इलियट क्या कर रहा था। इसलिए उसने पर्दे के पीछे काम किया और सोसाइटी से जितना हो सका, इलियट की मदद करने के लिए सामान जुटाया। और यह वास्तव में काफी हद तक था।

अंतिम व्यक्ति, निश्चित रूप से, रिचर्ड बैक्सटर थे, जो शुरुआती प्यूरिटन लोगों में से एक थे जिन्होंने कई किताबें लिखीं। रिचर्ड बैक्सटर, आप कैल्विन कॉलेज में क्रिश्चियन क्लासिक ईथरियल लाइब्रेरी में जा सकते हैं, और उनके पास रिचर्ड बैक्सटर की कई प्यूरिटन रचनाएँ हैं। जॉन बन्यन और पिलग्रिम प्रोग्रेस सभी प्यूरिटन-प्रकार की पृष्ठभूमि वाले हैं।

तो, इलियट के मिशन के दर्शन के बारे में इलियट कहते हैं: श्री इलियट की भारतीयों के प्रति चिंता धार्मिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं थी। इसे फिर से पढ़ें। यह महत्वपूर्ण है।

श्री इलियट की भारतीयों के प्रति चिंता केवल धार्मिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं थी। यह उनकी पसंदीदा और प्रसिद्ध राय थी कि उनके आध्यात्मिक कल्याण के प्रयासों से कोई स्थायी अच्छा प्रभाव उत्पन्न नहीं हो सकता जब तक कि सभ्यता और सामाजिक सुधार ऐसे प्रयासों के साथ न हों या उनके साथ न हों। इसलिए, उन्होंने सुसमाचार के प्रचार के साथ-साथ सुसमाचार के सामाजिक प्रभावों को भी देखा।

जैसा कि हमने कहा, एडवर्ड विसलो ने इसका समर्थन किया और उसके लिए बहुत सारा पैसा जुटाया। उन्होंने जो किताबें प्रकाशित कीं, उनमें से एक थी द डे ब्रेकिंग इफ नॉट द सन राइजिंग ऑफ द गॉस्पेल विद द इंडियंस इन न्यू इंग्लैंड। यह कहानी बताती है।

विसलो वापस जा रहा था, और जाहिर है, उन्होंने ये कहानियाँ उसके पास पहुँचाई, एक तरह से हस्तलिखित रूप में। विसलो उन्हें अपने साथ वापस इंग्लैंड ले गया, उन्हें प्रकाशन योग्य रूप में रखा, और फिर उन्हें बाहर निकाल दिया। द डे राइजिंग, इफ नॉट द सन राइजिंग ऑफ द गॉस्पेल मलाकी 1:11 पर आधारित था, जिसमें कहा गया है, उद्धारण, सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक, भारतीयों के बीच तुम्हारा नाम महान होगा।

उन्होंने भारतीयों को वहां रखा। तीन महीने बाद, एक और दस्तावेज आया जो थॉमस शेफर्ड के कुछ काम पर आधारित था, जिसमें मूल रूप से एलियट और उनके काम को दिखाया गया था। सुसमाचार की स्पष्ट धूप न्यू इंग्लैंड में भारतीयों पर चमक उठी।

एलियट के काम को भी इसमें शामिल किया गया था। वैसे, मेरे पास वेबसाइट पर इन दस्तावेजों की प्रतियां हैं। यदि आप बाइबिल ई-लर्निंग पर जाते हैं और इतिहास, न्यू इंग्लैंड इतिहास और अन्य चीजों और जॉन एलियट के अंतर्गत जाते हैं, तो आपको ये सभी दस्तावेज मिल जाएंगे।

अब वे सुरक्षित हैं, और मैंने उन्हें इकट्ठा करके एक साथ रख दिया है। इनमें से कुछ भारतीयों की कहानियाँ और उनके धर्मांतरण को पढ़ना वाकई दिलचस्प है। कुछ भारतीय सवाल इस तरह के थे।

शैतान का पहला पाप क्या है? शैतान का पहला पाप क्या था? और क्या शैतान या मनुष्य पहले बनाए गए थे। क्या मनुष्य पहले बनाए गए थे, या शैतान पहले बनाए गए थे? और भगवान ने सभी मनुष्यों को अच्छे दिल क्यों नहीं दिए? हममें से कितने लोगों ने यह पूछा है? भगवान ने सभी मनुष्यों को अच्छे दिल क्यों नहीं दिए? और बच्चे मरने के बाद कहाँ जाते हैं, जबकि उन्होंने कोई पाप नहीं किया है? यहाँ इन भारतीयों का एक समझदार सवाल है। वे बहुत समझदार लोग थे।

अंग्रेज़ लोग श्री इलियट के बारे में क्या सोचते थे, जो दुष्ट भारतीयों के बीच उन्हें शिक्षा देने के लिए आते हैं? अंग्रेज़ इलियट के बारे में क्या सोचते थे? यह एक बहुत ही दिलचस्प सवाल है क्योंकि कुछ अंग्रेज़ लोग वास्तव में इलियट के काम का विरोध करने जा रहे हैं। हम इसे बाद में देखेंगे। 1649 में एक तीसरा ट्रेक्ट आया, शानदार सुसमाचार, न्यू इंग्लैंड में भारतीयों के बीच सुसमाचार की शानदार प्रगति।

जॉन एलियट के तीन पत्र और थॉमस मेयू के एक पत्र, जो मार्था के वाइनयार्ड में भारतीयों के लिए मिशनरी थे। दूसरा बिल 1649 में 27 जुलाई को पारित किया गया और न्यू इंग्लैंड में ईसा मसीह के सुसमाचार को बढ़ावा देने और प्रचार करने के लिए एक अधिनियम बनाया गया, जो सीधे एलियट के काम पर केंद्रित था और उसका समर्थन करता था। इस समूह द्वारा यह मिशनरी प्रयास लगभग 120 वर्षों तक चला।

इलियट के जाने के इतने बाद भी यह जारी रहा। इसलिए, एडवर्ड विंसलो की बुद्धिमानी से शुरू में एक विधेयक का मसौदा तैयार करने और फिर उसके प्रायोजन के बिना उसमें रुचि बनाए रखने की दृढ़ता के साथ, जॉन इलियट का अपने पड़ोसियों, पड़ोसी भारतीयों के बीच मिशनरी कार्य, शायद शुरू में ही समाप्त हो गया होता। मुझे वास्तव में नहीं लगता कि यह शुरू में ही समाप्त हो गया होता।

मुझे लगता है कि एलियट ने कोई रास्ता निकाला होगा और ऐसा किया होगा क्योंकि वह अपने सपने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में बहुत दृढ़ और दृढ़ था। लेकिन वैसे भी, विंसलो ने उनकी बहुत मदद की, और परिणाम यह हुआ कि 1,200, 1,200 पाउंड और इस तरह की चीजें, सबसे बड़ा खर्च, यह पता चला, 1663 में एलियट की बाइबिल की छपाई के लिए था। और मोटे तौर पर,

ठीक है, हम इस बारे में तब बात करेंगे जब हम बाइबिल के बारे में बात करेंगे, लेकिन इस सोसायटी के आधार पर एक प्रिंटिंग प्रेस अमेरिका भेजी गई थी ताकि एलियट अपनी भारतीय बाइबिल, इसकी एक हजार प्रतियां छाप सकें।

गॉस्पेल के प्रचार-प्रसार के लिए सोसायटी के गवर्नर रॉबर्ट बॉयल ने एलियट के दृष्टिकोण को समझा और वास्तव में उनकी मदद की। इसलिए, रिचर्ड बैक्सटर, एडवर्ड विंसलो और रॉबर्ट बॉयल इंग्लैंड के तीन लोग थे जिन्होंने वास्तव में उनकी मदद की। विडंबना यह है कि, जैसा कि मैंने पहले कहा था, पहले सत्र में, उम्मीद थी कि भारतीय धर्मांतरित लोग मृत एंग्लिकन चर्च में जान फूंक सकते हैं।

इसलिए एंग्लिकन चर्च ने अमेरिका में भारतीयों के धर्मांतरण के लिए एलियट द्वारा किए जा रहे काम का समर्थन किया, लेकिन एलियट और कुछ प्यूरिटन अभी भी सोच रहे थे, उम्मीद कर रहे थे कि धर्मांतरण और उनके पापों के लिए आंसू और पश्चाताप और मसीह की ओर मुड़ने की उनकी कहानियाँ, कि उनकी कहानियाँ इंग्लैंड वापस ले जाई जा सकती हैं और फिर यह शुद्धिकरण और पश्चाताप और यीशु मसीह में विश्वास और जीवित होने, पुनर्जीवित होने, इंग्लैंड में चर्च के पुनरुद्धार में मदद करेगी, जिसे वे मृत मानते थे। और इसलिए उस पर आगे-पीछे देखना बहुत दिलचस्प है। और वे उम्मीद कर रहे थे कि उनमें से कुछ वापस इंग्लैंड जाएंगे और भारतीय वास्तव में भारतीयों के लिए, लोगों के लिए एक आदर्श बन सकते हैं।

अब, इलियट की मुलाकात 1646 में न्यूटन या नॉनंटम में वाबन के विगवाम में हुई। ठीक है। अब, हुआ यह कि वाबन, जो वास्तव में एक बहुत ही चतुर व्यक्ति था, जब पहली बार इलियट ने वहाँ उपदेश दिया, तो उसने इलियट से पूछा कि क्या भारतीयों को अपने लिए कुछ ज़मीन मिल सकती है।

वे हर जगह घूमते थे और उनके पास ज़मीन नहीं थी, और सभी अंग्रेज़ बाड़ और शहर बना रहे थे, और वे वहाँ नहीं जा सकते थे और इस तरह की चीज़ें कर रहे थे। और इसलिए, वाबन ने कहा, ठीक है, हमें कुछ संपत्ति की भी ज़रूरत है। तो क्या हुआ, और अब हम आपको उसका दिखाएंगे, पहला भारतीय गाँव, पहला प्रार्थना करने वाला भारतीय गाँव, नैटिक नामक स्थान पर था।

नैटिक का मतलब है पहाड़ियों का स्थान। उन्होंने न्यूटन को देखा, जाहिर है, नॉनंटम ऐसा करने के लिए स्पष्ट स्थान होता, लेकिन उन्होंने वहाँ देखा, और वहाँ वास्तव में एक गाँव और उस तरह की चीज़ों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त नहीं था। इसलिए, उन्होंने चार्ल्स नदी की ओर देखा।

चार्ल्स नदी में एक मोड़ है और यह नैटिक है। और इसलिए, वे तब नैटिक गए। और अब मेरे पास कुछ तस्वीरें हैं जो मैं नैटिक चर्च की दिखाना चाहता हूँ।

और वहाँ एक चट्टान है जो सम्मान करती है, और वहाँ एक पट्टिका है जो एलियट को सम्मानित करती है और साथ ही मुफ़्त बीकन लाइब्रेरी एक ऐतिहासिक स्थल है जहाँ एक तरह का

ओबिलिस्क है, जिस पर एलियट का नाम खुदा हुआ है और चीज़ें हैं। तो, मैं तुम्हें वो दिखाऊँगा। ठीक है।

नैटिक में एलियट चर्च के बाहर आज भी यह चिन्ह लगा हुआ है। और फिर चर्च के ठीक बगल में, मैं आपको आगे दिखाऊँगा, एक चट्टान है जिस पर एक स्मारक पट्टिका लगी हुई है। यह बहुत दिलचस्प है।

तीसरा, हम बीकन फ्री लाइब्रेरी में जाएंगे और वहाँ जॉन एलियट को समर्पित ओबिलिस्क देखेंगे। यह एलियट चर्च के अंदर है। यहाँ ऊपर बाईं ओर पहला नाम वास्तव में एक भारतीय व्यक्ति का नाम है जिसने एलियट के जाने के बाद उनकी जगह ली थी।

उसके बाद, सूचीबद्ध सभी लोग अंग्रेज़ हैं। और इसलिए चर्च अपनी भारतीय जड़ों से दूर चला गया। यहाँ नैटिक में एलियट चर्च से लगभग 50 गज की दूरी पर एक अद्भुत रॉक मेमोरियल है।

और यहाँ मुफ़्त बीकन लाइब्रेरी में ओबिलिस्क है, जो एलियट चर्च से चट्टान से कुछ सौ गज की दूरी पर है। और जब हम नैटिक पर जा रहे हैं, तो हम नैटिक के उत्तरी भाग में भी जा सकते हैं जहाँ डाकघर है। यह नैटिक डाकघर है, जहाँ जॉन एलियट का भारतीयों से बात करते हुए एक भित्तिचित्र है।

ठीक है। अब बोस्टन बाहर निकल रहा था। इसलिए बसने वाले बोस्टन में बस रहे थे, जो बाहर निकल रहा था, और भारतीयों को रहने के लिए कोई जगह चाहिए थी।

और इसलिए, उन्होंने नैटिक को आज की तरह ही काफी दूर तक फैला दिया, हालाँकि यह अब बोस्टन का एक उपनगर है। भारतीय घुमक्कड़ और शिकारी, मछुआरे और बाड़ लगाने वाले थे, और भूमि और गाँवों के स्वामित्व की अवधारणाएँ उनके सोचने के तरीके के लिए बहुत विदेशी थीं। हालाँकि, आरा मिलों और मकई मिलों और सामान ने नदियों और चीजों को प्रदूषित किया और मछली पकड़ने और इस तरह की चीजों के मामले में भारतीयों को नुकसान पहुँचाया।

और इसलिए भारतीय अपनी ज़मीन पाने के इच्छुक थे। नैटिक में 6000 एकड़ ज़मीन को मंजूरी दी गई। और यह आज वेलेस्ली क्षेत्र, वेलेस्ली नीधम क्षेत्र जैसा है।

और नैटिक, बेशक, आज भी जाना जाता है। बस टर्नपाइक पर चढ़ो, मैसाचुसेट्स टर्नपाइक पर। और मूल रूप से, आप नैटिक आते हैं, और आप इसे वहाँ देख सकते हैं।

तो, 1650 में, तो, तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह ठीक है, 1646 में, वह विग्वम, विग्वम, वाबोन के विग्वम में जाता है। और फिर 1650 में, 1650 में, चार साल बाद, उन्हें वास्तव में नैटिक गांव, एक प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव के लिए जमीन मिल गई। उन्होंने चार्ल्स नदी के किनारे बसाया, और उन्होंने मूल रूप से चार्ल्स नदी पर एक फुटब्रिज बनाया।

यह 80 फीट चौड़ा और नौ फीट ऊँचा था। भारतीयों को वास्तव में खुद पर बहुत गर्व था। और वास्तव में, जाहिर तौर पर डाउनस्ट्रीम या जो भी हो, उन्होंने जो अंग्रेजी पुल बनाया था वह एक

साल बाद ढह गया, सर्दी, आप जानते हैं, और न्यू इंग्लैंड में बहुत खराब मौसम था और पुल ढह गया।

और भारतीयों का पुल मज़बूती से खड़ा रहा। और भारतीयों को इस पर बहुत गर्व था। यह एक अच्छी बात थी।

फिर रिवरहेड, उन्होंने इसे एक अजीब तरह की चीज़ कहा। भारतीय इस तरह से मछली पकड़ते थे, और वे नदी में एक दीवार बनाते थे। फिर से, यह नियाग्रा नदी की तरह नहीं है, इस क्षेत्र में यह चार्ल्स नदी सुंदर है, आप जानते हैं, यह इतनी बड़ी नहीं है।

वैसे भी, वे एक चट्टान की दीवार बनाते हैं और चट्टान की दीवार में दोनों तरफ़ से एक छेद छोड़ देते हैं। और उस चट्टान की दीवार में, वे एक टोकरी रखते हैं, जिसे वे ईल बास्केट कहते हैं, या वे ईल पॉट, ईल पॉट कहते हैं। यह ईल पॉट लकड़ी की पट्टियों और दूसरी चीज़ों से बना होता है।

मछलियाँ तब छेद से होकर जाने के लिए मजबूर हो जाती थीं क्योंकि दीवारें बाहर आ जाती थीं। और फिर वे इस टोकरी में होती थीं, मूल रूप से, वे उन्हें टोकरी में पकड़ते थे। और इस तरह से वे इस ईल पॉट में मछली पकड़ते थे जिसे ईल पॉट कहा जाता था।

खैर, बाद में, और हम इस पर वापस आएं, एलियट बाइबिल का अनुवाद कर रहे थे, और यह सीसरा में कहता है, आप जानते हैं, जेल, और डेबोरा और बेरीक सीसरा और याबीन, हथोर के राजा और न्यायियों की पुस्तक के खिलाफ युद्ध के लिए बाहर जाते हैं। मूल रूप से, क्या होता है यह वर्णन करता है कि यह महिला अपनी जाली के पास जाएगी और अपने बेटे की उस लड़ाई से विजयी होकर घर लौटने की उम्मीद करते हुए अपनी जाली से बाहर देखेगी। और इसलिए, एलियट इसका अल्गोंक्विन में अनुवाद कर रहे हैं।

और वह कहता है, जाली क्या है? उनकी खिड़कियों पर जाली नहीं है। असल में, उनके पास खिड़कियाँ नहीं हैं। तो वैसे भी, वह कहता है, मैं जाली कैसे लगाऊँ? खैर, उसने उस व्यक्ति को बताया जिसके साथ वह अनुवाद पर काम कर रहा था।

और उसने कहा, ठीक है, शायद यह एक ईल पॉट है, एक ईल पॉट। खैर, हमने बताया है कि ईल पॉट क्या होता है। और इलियट को बस यह अहसास था, और इलियट इस मामले में बहुत बढ़िया थे।

मेरा मतलब है, उसने अनुवाद को बहुत अच्छी तरह समझ लिया। उसने कहा, आप जानते हैं, यह वास्तव में ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है। और इसलिए उसके पास एक शब्द भी नहीं था।

तो, उसने एक शब्द बनाया, लैटिस-ओट, लैटिस-ओट। तो, उसने लैटिस शब्द का इस्तेमाल किया और अंत में ओटी लगा दिया, लैटिस-ओट, और फिर उसका इस्तेमाल किया और फिर उसे सिखाया, उसे सिखाने की कोशिश की कि लैटिस क्या होता है और क्या-क्या। मुझे याद है जब मैं इज़राइल में था, मैं हिब्रू पढ़ रहा था, और मैं एक दुकान में गया।

और उन दिनों, मैं एक कैसेट टेप खरीदना चाहता था। ठीक है। ये उन लोगों के लिए है जिनके पास चुंबकीय टेप था, वे गोल-गोल घूमते थे और आप इसे बूम बॉक्स या उन दिनों की किसी भी चीज़ पर चला सकते थे।

तो, मैं कैसेट टेप पर जाना चाहता था। और इसलिए, मैं स्टोर में गया, और मुझे कैसेट टेप और अन्य शब्द नहीं पता था। इसलिए, मैंने उस आदमी को एक मशीन के बारे में बताया जो इधर-उधर घूमती है और जिसे आप अपने ओज़नायिम, अपने कानों और अन्य चीज़ों से सुनते हैं।

और मैं इस बात का वर्णन करने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं वहाँ से बाहर निकलता हूँ, असफल। मुझे कैसेट टेप या कुछ और नहीं मिला।

मैं घर गया और मैंने इसे खोजा, और पाया कि कैसेट के लिए हिब्रू शब्द कासेटिम है। वे बस अंग्रेजी शब्द कासेटिम का उपयोग करते हैं और हिब्रू में बहुवचन अंत पर im अंत लगाते हैं। और यह वैसा ही था।

इसलिए, जब आप भाषाओं के बीच जाते हैं, तो कभी-कभी भाषाएँ बिल्कुल एक-दूसरे से मेल नहीं खातीं। और आपको भाषाओं के बीच इस तरह की जिम्मी वाली चीज़ करनी पड़ती है। एलियट ने ऐसा ही किया।

और वैसे, यह 1640 की बात है। जब वह व्यक्ति इस भाषा को सीखने की कोशिश कर रहा था, तब उसकी उम्र 40 साल थी। यह वाकई आश्चर्यजनक है कि वह क्या कर पाया।

शहर का शासन। नाटक को शहर के शासन की ज़रूरत है। वे शहर का शासन कैसे चलाएँगे? इलियट कहते हैं, निर्गमन 18।

वह मूल रूप से कहते हैं कि 10 के शासक, 50 के शासक, सौ के शासक। आप 10 में से अपने नेता चुनते हैं। आप 50 में से अपने नियम चुनते हैं।

आप सौ से ज़्यादा चीज़ों पर अपने नियम चुनते हैं। और इसलिए, उसने वही तय किया जो उसके इंग्लैंड जाने से पहले विफल हो गया था। और राजा उस पर बहुत नाराज़ हो गया।

उसने राजा से माफ़ी मांगी थी क्योंकि वह इस तरह से राजतंत्र को कमज़ोर कर रहा था। खैर, अब, चर्चों में, वह इसे लागू करता है। इसलिए वह ईसाई राष्ट्रमंडल से चला जाता है, जिसने इंग्लैंड में बमबारी की, जिससे वह बड़ी मुसीबत में पड़ गया।

अब वह चर्चों के कम्युनियन नामक एक और दस्तावेज़ लिखता है जिसमें वे इस निर्गमन का उपयोग करते हैं, निर्गमन 18 में मूसा को जेथ्रो की सलाह। और इसलिए यह थोड़ा मज़ेदार है। वह एक दृढ़ निश्चयी किस्म का आदमी है।

इलियट की वाचा लिखी गई, और लोगों ने 1651 में इसका पालन करने की प्रतिज्ञा की। और यहाँ कुछ प्रतिज्ञाएँ हैं। यह सुंदर है।

इस तरह से एलियट ने इन लोगों के साथ यह वाचा स्थापित की। “परमेश्वर हम पर शासन करेगा।” वाह, क्या कथन है।

परमेश्वर हम पर शासन करेगा। यशायाह 33:22, प्रभु हमारा न्यायी है। प्रभु हमारा कानून बनानेवाला है।

यहोवा हमारा राजा है। उसकी पुस्तक हमारा मार्गदर्शन करेगी, उसकी पुस्तक हमारा मार्गदर्शन करेगी और हमें मार्ग पर ले जाएगी। हे यहोवा, हमें बुद्धि सिखाओ।

अपनी आत्मा को हमारे दिलों में भेजो और उसे हमें सिखाने दो। हे प्रभु, हमें अपने लोग बना लो, और हम तुम्हें अपना परमेश्वर बना लें। उद्धरण समाप्त।

कितना सुंदर कथन है। भारतीयों के लिए यह भारतीयों और ईश्वर तथा अन्य चीजों के बीच एक अनुबंध था। इलियट, इलियट की कुंजी, मुझे लगता है, उसकी मित्रता और उसकी दयालुता थी।

मुझे लगता है कि आप इसे बस इतना ही कह सकते हैं कि वह भारतीयों से प्यार करते थे। वह उनका सम्मान करते थे। वह उनका सम्मान करते थे और उनके साथ गरिमा और सम्मान के साथ पेश आते थे।

उसने उनके सवालों को सुना और उनसे बातचीत की। उसने उनके बच्चों को लिया और उनसे धर्मशिक्षा ली और उन्हें सुसमाचार और जीने के नए तरीके और चीजें सिखाईं। और उन्होंने उस पर भरोसा किया।

भारतीयों ने भरोसा किया, लेकिन उन्होंने भरोसा नहीं किया। आप जानते हैं, हम बाद में देखेंगे; उन्होंने बहुत से अंग्रेज़ बसने वालों पर भरोसा नहीं किया। ठीक है। लेकिन उन्होंने इलियट पर भरोसा किया।

और अगर एलियट ने उन्हें बताया, तो यह सुसमाचार और अन्य बातों की तरह था। इसलिए, एलियट का इन भारतीयों के साथ काफी अच्छा रिश्ता था। वे उससे प्यार करते थे।

तो यह है कि वह उनसे प्यार करता था। यह खूबसूरत था। अब, कुछ किस्से-कहानियाँ।

वाबोन, जस्टिस वाबोन, जो हर किसी के लिए नियम बनाता है। है न? तो वाबोन एक बड़ा बूढ़ा आदमी है और अब मुख्य किरदार है। खैर, वाबोन के साथ समस्या यह है कि उसके पास ये सारे नियम हैं, है न? तो, फिर सब्बाथ के दिन कोई उसके घर आता है।

प्यूरिटन और सब्बाथ याद है? ठीक है। आप सब्बाथ का उल्लंघन नहीं करते। इसलिए सब्बाथ पर वाबोन अपने घर पर है।

कोई आता है, और एक अप्रत्याशित आगंतुक रुकता है। वह जानता है कि वहाँ पेड़ पर एक रैकून है। और इसलिए, जो होता है वह यह है कि वह बाहर जाता है, और रैकून को पकड़ता है, रैकून को मारता है, और फिर अपने अप्रत्याशित आगंतुकों के लिए भोजन उपलब्ध कराता है। हालाँकि, कुछ लोगों ने वाबोन को पकड़ लिया और वास्तव में सब्बाथ पर पकड़े गए।

वह कह रहा था, यह तुम क्या कर रहे हो? सब्ब के दिन जानवरों को मार रहे हो? तो वाबोन अपने ही नियमों का उल्लंघन कर रहा था। उन्होंने उसे पकड़ लिया और उसे इसके लिए बुलाया, और फिर वह पीछे हट गया, और वह गलत था और इस तरह की बातें। और वह भी अपने खुद के कानून और चीजों से दूर नहीं जा सका।

तो, मुझे नहीं पता। मुझे लगा कि यह थोड़ा मज़ेदार है। यहाँ एक मज़ेदार बात है।

यह वास्तव में मज़ेदार नहीं है, लेकिन टोथर्सवैम्प नाम का एक आदमी है। टोथर्सवैम्प और वह भारतीयों का नेता था और इस तरह की चीजें। और जो हुआ वह यह था कि टोथर्सवैम्प, भारतीयों को शराब और नशे की समस्या थी।

जुआ, जुआ, और नशे और अन्य चीजें। तो, जो हुआ वह यह था कि टोथर्सवैम्प वहाँ नेता था, और तीन बड़े लोग नशे में थे। तो वे नशे में थे, और उन्होंने कहा, अरे यार, हम मर चुके हैं, और टोथर्सवैम्प हमारे मामले में होने जा रहा है, और हम यहाँ मुसीबत में पड़ने जा रहे हैं।

और इसलिए, जो हुआ वह मूल रूप से यह था कि इन लोगों ने कहा, ठीक है, लेकिन टोथर्सवैम्प का एक बेटा है, 11 साल का बेटा। अगर हम उसके 11 साल के बेटे को भी शराब पिला दें तो क्या होगा? अगर हम उसके 11 साल के बेटे को भी शराब पिला दें, तो वह हमारे साथ कुछ नहीं करेगा। उसे अपने बेटे के साथ ऐसा करना ही होगा।

इसलिए, वह हमें बेड़ियों में नहीं डालेगा या हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं करेगा क्योंकि उसका बेटा भी नशे में है। इसलिए ये तीन लोग मूल रूप से टोथर्सवैम्प के बेटे को नशे में डाल देते हैं। नहीं, उन्हें बेड़ियों में नहीं डाला जाएगा या कोड़े नहीं मारे जाएँगे और ऐसी ही अन्य चीजें की जाएँगी।

तो टोथेरस्वैम्प ने देखा कि उन्होंने क्या किया। उसने उन तीनों लड़कों को बेड़ियों में जकड़वा दिया और उस समय के नियम के अनुसार पीटा। और उसके अपने बेटे को भी कुछ समय के लिए बेड़ियों में जकड़वा दिया गया और फिर स्कूल ले जाया गया, जहाँ उसे और उसके अपने लड़के को कोड़ों से पीटा गया।

और इसलिए यह ईसाई धर्म के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जाहिर है, भारतीय अपने शासक की कर्तव्य भावना से बहुत प्रभावित थे, कि वह अपने बेटे को सबक सिखाने के लिए अपने बेटे के साथ भी ऐसा करेगा और इस तरह की बातें। हालाँकि, और मैं टोथर्सवैम्प के बारे में बहुत अधिक बात नहीं करना चाहता, मैं एलियट की प्रतिक्रिया के बारे में बात करना चाहता हूँ।

एडम्स ने इलियट पर अपनी किताब में तीन लोगों के नशे में धुत होने और बेटे के नशे में धुत होने की कहानी बताई है। और इलियट ने कहा कि मैं इसमें सिर्फ नाराज़गी के अलावा कुछ नहीं पढ़ सकता। मुझे हमारे इच्छित काम पर संदेह होने लगा।

मुझे नहीं पता था कि क्या करना है। दूसरे शब्दों में, एलियट ने यह देखा, और समस्या का एक हिस्सा यह था कि नशे में धुत एक व्यक्ति ने उस छोटे लड़के के साथ ऐसा किया। यह एलियट के अनुवादकों में से एक था जिसने एलियट के साथ बाइबल का अनुवाद किया था।

इलियट इस आदमी को बहुत अच्छी तरह से जानते थे। और अब वह खुद से पूछ रहे हैं, मुझे हमारे इच्छित काम पर संदेह होने लगा है। और आप इस प्रक्रिया को देख सकते हैं।

यह एक ईमानदार आदमी है। वह कह रहा है, क्या यहाँ सब कुछ बिखर रहा है? जो आदमी मेरे साथ बाइबल का अनुवाद कर रहा है, उसने इस 11 वर्षीय बच्चे को शराब पिलाना बंद कर दिया। मैं क्या कर रहा हूँ? मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? और अगर कोई भी सेवकाई में रहा है, तो आप जानते हैं, कुछ बिंदुओं पर, आप खुद से इस तरह के सवाल पूछते हैं।

और मुझे यह बहुत पसंद है कि यह आदमी ईमानदार है और उसकी ईमानदारी का यह स्तर है। मुझे नहीं पता था कि क्या करना है। पापों की काली छाया, उस व्यक्ति पर प्रतिबिंबित, मेरा दिल ही मुझे धोखा दे सकता है।

अपराधियों में से एक के लिए, अपराध में सबसे कम यह था कि वह मेरा दुभाषिया था, जिसका उपयोग मैंने पवित्र शास्त्र के एक अच्छे हिस्से का अनुवाद करने में किया है। और उस संबंध में, मैंने शैतान के ज़हर को बहुत देखा। और आप देख सकते हैं, वह वास्तव में बहुत परेशान हो रहा है, खुद से और वह क्या कर रहा है, इस पर सवाल उठा रहा है।

और यही एक और बात है जिसने जॉन इलियट को वह बनाया जो वह थे। और इसलिए, ठीक है। मैं महिलाओं के जीवन पर टिप्पणी करना चाहता हूँ।

बहुत से लोग आलोचना करते हैं; वे कहते हैं, सभी उपनिवेशवादी आते हैं, और वे, आप जानते हैं, भारतीय संस्कृति के लिए ये सब करते हैं। वे इसे बाहर फेंक देते हैं, और ईसाई धर्म हावी हो जाता है और इन सभी चीजों को नष्ट कर देता है जैसे कि हमारी पीढ़ी के लोगों को संस्कृति को नष्ट करने, स्मारकों को तोड़ने और टॉम सॉयर पर प्रतिबंध लगाने के बारे में बात करनी चाहिए।

और वास्तव में, अब मैसाचुसेट्स में भी, वे इलियड और ओडिसी नहीं पढ़ते हैं। क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं? होमर का इलियड और ओडिसी। यह 2000 साल से चला आ रहा है, अब नहीं।

ठीक है। तो, हम नहीं हैं; हम पत्थर फेंकने वाले नहीं हैं, बस इतना ही मैं कहने की कोशिश कर रहा हूँ। और मैं वास्तव में, हम इन लोगों को उनके ऊंचे घोड़ों पर ले जाते हैं।

लेकिन मैं जो कह रहा हूँ, ठीक है, तो आइए देखें कि ईसाई धर्म से पहले भारतीयों के लिए महिलाओं का जीवन कैसा था और इसका क्या प्रभाव था। पत्नियों के साथ उनके व्यवहार में बहुत बड़ा सुधार जल्द ही दिखाई देने लगा। भारतीय संस्कृति में पत्नी की पिटाई, जो कि सामान्य बात थी, उनके बीच गैरकानूनी थी।

ठीक है। क्या यह अच्छी बात है? आप कहते हैं, ठीक है, ईसाई धर्म सिखाता है कि आप अपनी पत्नी को नहीं मार सकते। अपनी पत्नी को पीटना भारतीय संस्कृति है।

अच्छा, क्या, तुम्हें पता है, सच में? ठीक है। यह एक बहुत बड़ा सुधार है। ठीक है।

आंदोलन बहुविवाह से भी दूर चला गया। उस संस्कृति और चीजों में बहुविवाह था। वे इससे दूर चले गए।

और मुझे लगता है कि इलियट और मैंने कुछ बातें बहुत ही सौम्य तरीके से पढ़ी हैं। उन्होंने सिर्फ़ इतना नहीं कहा कि अपनी पत्नियों को सड़क पर फेंक दो, और इन बेचारी महिलाओं के पास जाने के लिए कोई जगह नहीं होगी। नहीं, यह सिर्फ़ इतना था कि वे एक ही विवाह की ओर ज़्यादा बढ़ेंगे, और यह एक समयावधि में किया गया था।

इलियट ने इसे समझा। आप उन महिलाओं को बाहर नहीं निकाल सकते और इस तरह की चीजें नहीं कर सकते। इसलिए, बहुविवाह को कम किया गया।

पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करना भी गैरकानूनी था और ऐसी ही अन्य चीजें भी। हमने पहले एक महिला के बारे में कहानी पढ़ी थी जो कहती है कि मेरे पति प्रार्थना करने से पहले बहुत गुस्से में और आगे बढ़ने वाले थे। लेकिन जब से उन्होंने प्रार्थना करना शुरू किया है, वे इतने गुस्से में नहीं रहे, बल्कि थोड़े ही रहे।

और इसलिए पत्नियाँ भी देख सकती थीं कि मसीह ने उनके पतियों में क्या बदलाव किया है। और यह महिला कहती है, आप जानते हैं, मेरे पति हमेशा बहुत गुस्से में रहते थे। अब वह एक ईसाई है, और अब वह इतना भी नहीं है।

वैंपस, वैंपस ने किसी मामूली मौके पर, आवेश में आकर अपनी पत्नी को इस तरह से पीटा कि पहले जंगली जनजातियों में यह बहुत आम बात थी और बिना किसी को बताए ही हो जाती थी। लेकिन जब से उन्होंने ईसाई धर्म अपनाया है, उन्होंने इसे एक बड़ा अपराध मानना सीख लिया है। ऐसे मामलों में अपराधी को जुर्माना देना पड़ता था।

वैंपस को सार्वजनिक बैठक में खड़े होकर अपनी गलती के लिए जवाब देने के लिए कहा गया। और इसलिए यहाँ उस व्यक्ति को उसके किए के लिए सार्वजनिक रूप से फटकार लगाई जा रही है। मैसाचुसेट्स के गवर्नरों में से एक जॉन एंडिकॉट ने वास्तव में 1651 के आसपास अपना रास्ता बना लिया था।

तो, यह है, नैटिक को बस एक साल ही हुआ है। नैटिक की स्थापना एक प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव के रूप में की गई थी, और वे ये सब चीजें स्थापित कर रहे हैं। मैसाचुसेट्स के गवर्नर नैटिक का दौरा करने के लिए आते हैं।

और यहाँ जॉन एंडिकॉट की टिप्पणियाँ हैं। जॉन एंडिकॉट उनके उद्योग और सरलता, किले, मीटिंग हाउस और पुल से प्रभावित थे। इस समय, 47, 1651 में इलियट की उम्र लगभग 47 वर्ष थी।

एंडिकॉट ने सच ही कहा कि यह मेरे लिए कई सालों में सबसे बेहतरीन यात्राओं में से एक थी। इसलिए, एंडिकॉट बाहर जाता है और देखता है कि नैटिक में क्या चल रहा है। और वह कहता है, यार, यह सबसे अच्छी चीज़ है जो मैंने कई सालों में देखी है।

और इसलिए वह वास्तव में प्रभावित हुए। इलियट संस्कृति, नैटिक की ईसाई संस्कृति और वहाँ प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव के निर्माण के मामले में कुछ अविश्वसनीय काम कर रहे थे। हालाँकि, इसकी स्थापना 1650 में हुई थी।

पहला चर्च लगभग 1660 तक नहीं बना था। लगभग 10-10-वर्ष की अवधि में गांव एक प्रार्थना करने वाला भारतीय गांव था, लेकिन चर्च उन सभी चीजों के लिए विकसित नहीं हुआ था जो एलियट देखना चाहते थे। और इसलिए एलियट इन भारतीयों और अन्य लोगों के साथ विभिन्न चीजें कर रहे थे।

और तब कुछ भारतीयों ने ये स्वीकारोक्ति की थी। ठीक है। मैं उनमें से एक को पढ़ता हूँ।

और यह टोथर्सवाम्प है, वह आदमी जिसके साथ तीन शराबी लोग उसके बच्चे के पीछे पड़े हैं, उसे नशे में धुत कर रहे हैं और इसी तरह की हरकतें कर रहे हैं। वह कहता है, उद्धरण, अब यह उसका कबूलनामा है। ठीक है।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं नरक का हकदार हूँ। मैं खुद को नहीं बचा सकता, लेकिन मैं अपनी आत्मा और अपना शरीर मसीह को देता हूँ। और मैं अपनी आत्मा को उसके भरोसे छोड़ता हूँ, क्योंकि वह मेरा उद्धारकर्ता है।

और मैं जीवित रहते हुए उसे पुकारना चाहता हूँ। वैसे, वाबन का कबूलनामा नहीं बन पाया। और उन्हें तब तक इंतजार करना पड़ा जब तक कि उसे मंजूरी नहीं मिल गई क्योंकि एक और व्यक्ति था जो एक स्कूल शिक्षक था और उसका भी कबूलनामा था।

रॉबिन स्पीन नाम का एक आदमी है जो एक कहानी सुनाता है, एक मार्मिक कहानी जिसमें उसके बच्चे ने मौत के कगार पर एक स्वीकारोक्ति की है। फादर रॉबिन टिप्पणी करते हैं कि मैं यह नहीं बता सकता कि उसके बच्चे की मृत्यु का दुख या उसके विश्वास की खुशी ज़्यादा थी। ठीक है।

मुझे इसे फिर से पढ़ने दो। वह यह नहीं बता पाया कि जब उसका बच्चा मरा तो उसे अपनी मौत का दुख ज़्यादा था या उसके विश्वास की खुशी। इसलिए उसका बच्चा मर गया।

इस बात में खुशी है कि बच्चा मसीह को जानता है, लेकिन बच्चे को खोने का दुख भी है। और इसलिए, आप भारतीयों और इस तरह की चीजों के साथ ऐसा पाते हैं। उनके पास एक दिन था, जिसे वे सवाल पूछने का दिन कहते हैं।

और सवाल पूछने का यह दिन तीन साल बाद आया जब उन्होंने भारतीयों से सैद्धांतिक सवाल पूछे थे। यह लगभग एक मंत्री पद की पुष्टि की तरह है जब वे सुसमाचार के मंत्री के लिए परीक्षा देने जाते हैं, जहाँ वे उनसे सवाल पूछते हैं और इस तरह की चीजें करते हैं। और इसलिए यहाँ आपके पास यह है।

वे भारतीयों के साथ ऐसा कर रहे हैं। और इसलिए वे इसे सवाल पूछने का दिन कहते हैं, और उनमें से कुछ पास हो जाते हैं। और जैसा कि मैंने कहा, वाबोन पास नहीं हुआ।

वह बाद में वापस आ गया। एक और बात जिसका मैं जिक्र करना चाहूँगा वह यह है कि 1646 में वाबोन के विगवाम के 14 साल बाद, 14 साल बाद, उन्होंने 1660 में नैटिक में पहला चर्च स्थापित किया। और लगभग 50 लोग ऐसे थे जो वहाँ से गुज़रे और भारतीयों के आधार बन गए जो वहाँ प्रार्थना करने वाले भारतीय चर्च का आधार बन गए।

एक बात जो मुझे बाद में समझ में आई, और मुझे इसका एहसास नहीं था, वह यह है कि एलियट बहुत लंबी दूरी की यात्रा करते थे, और उनकी सहनशक्ति अविश्वसनीय थी क्योंकि वह रॉक्सबरी में प्रचार करते थे, और फिर वह घोड़े पर सवार होकर नैटिक तक जाते थे। फिर वह मेरिमैक नदी पर थे और जंगल के बीच से लंबी यात्राएँ करते थे, कभी-कभी जहाँ कोई रास्ता और सामान नहीं होता था, घोड़े पर सवार होकर और बस, बस, वहाँ इन क्षेत्रों और चीजों में से कुछ को पार करना वाकई बहुत कठिन समय था। और यह पता चला कि वह एक पैर से लंगड़ा था।

और मुझे इसका एहसास तब तक नहीं हुआ जब तक मैंने कई स्रोतों को नहीं पढ़ा। और एक व्यक्ति ने बताया कि उसके एक पैर में साइटिका की समस्या थी। यह इतनी गंभीर थी कि उसका पैर लगभग लकवाग्रस्त हो गया था।

और इसलिए, वह एक पैर से लंगड़ा हो गया। और इसलिए, उसके तीन बेटों को हार्वर्ड में प्रशिक्षित किया गया। इलियट के तीन बेटों को हार्वर्ड में प्रशिक्षित किया गया।

और जैसा कि हमने कहा, उनके छह बच्चों में से चार की मृत्यु उनसे पहले हो गई थी, जो उनके लिए बहुत दुखद और भारी बात थी। वह और उनकी पत्नी दोनों ही जीवित रहे, वह 86 वर्ष तक जीवित रहे। और इसलिए यह वास्तव में बहुत भारी बात थी। मुझे नहीं पता कि आप एक बच्चे की मृत्यु से ज़्यादा कठिन क्या देख सकते हैं।

आप जानते हैं, बच्चों को मरना चाहिए, पहले माता-पिता को मरना चाहिए, और फिर बच्चों को, जब बच्चे पहले मर जाते हैं, तो माता-पिता के लिए विनाशकारी होता है। और कुछ लोगों को इस तरह की चीज़ों का सामना करना पड़ा है। तो, ठीक है, अब और अधिक भारतीय शहर हैं।

नैटिक, जो अब 1660 है, स्थापित है। वहाँ एक चर्च में 15 ईसाई हैं, संभवतः वहाँ लगभग दो या 300 भारतीय हैं। वे ईसाई हैं, पूरी तरह से चर्च के सदस्य नहीं हैं, लेकिन इस प्रार्थना करने वाले भारतीय शहर में ईसाई हैं। तब नैटिक मॉडल यह था कि उन्होंने इसे बढ़ाया। और इसलिए उन्होंने मूल रूप से इसे सात शहरों और फिर 14 शहरों तक बढ़ाया।

और इसलिए आज चेम्सफोर्ड जैसे कुछ शहरों के आधुनिक नाम मैं आपको बताने जा रहा हूँ, लिटलटन, मार्लबोरो, ग्राफ्टन, होपिंगटन, नैटिक, बेशक, और स्टॉटन। और फिर कैंटन, मुझे अभी कैंटन के बारे में भी पता चला, यह दिलचस्प है। कैंटन, रॉक्सबरी के ठीक नीचे, वहाँ, और आप आज 95 पर ड्राइव करके जा सकते हैं, और आप कैंटन से आगे निकल सकते हैं।

कैंटन वह जगह थी जहाँ जॉन इलियट जूनियर पादरी बने। और इसलिए वह वास्तव में कैंटन चर्च में पादरी बन गए। यह वहाँ एक भारतीय चर्च था।

इसलिए, गूकिन 14 गांवों के अधीक्षक बन गए, ईसाई प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव। डैनियल गूकिन 1656 में इसके अधीक्षक बन गए। और रविवार को, मैं यहाँ एक उद्घरण पढ़ना चाहता हूँ।

रविवार को भारतीय ढोल की थाप पर दो बार इकट्ठा होते हैं और अपने अंग्रेजी परिधानों में पूरी गंभीरता से सभा भवन की ओर चलते हैं। अंदर खाली बेंचों पर, एक तरफ पुरुष बैठते हैं, दूसरी तरफ महिलाएं, ठीक वैसे ही जैसे अंग्रेजी प्रथा में होता है। हम देखते हैं कि अब बूढ़े हो चुके वाबन ने अपनी समझदारी और धर्मनिष्ठा के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की।

मैं किसी ऐसे भारतीय को नहीं जानता जो उससे बेहतर हो। तो, वाबन एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका भारतीयों द्वारा सम्मान किया जाता था। और फिर यहाँ भी हमारे पास विसलो है जो बता रहे हैं कि वह थे, वाबन का अंग्रेजों द्वारा भी सम्मान किया जाता था।

मेरे लिए यह बहुत दिलचस्प है कि जब मैं गूगल कर रहा था, तो मैं न्यूटन को खोजने के लिए एक मानचित्र गूगल कर रहा था और इनमें से कुछ शहर कहाँ थे, और वे वेलेस्ली क्षेत्र, न्यूटन क्षेत्र और नैटिक क्षेत्र में बोस्टन के दक्षिण-पूर्व में हैं। यह दक्षिण बोस्टन की ओर और उससे भी ज़्यादा है। और मैं एक छोटे से गाँव में आया। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि गाँव का नाम क्या था? वाबन।

हाँ। मैं कह सकता हूँ कि बहुत; मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो वाबन की पृष्ठभूमि जानता हो, लेकिन उस शहर का नाम वाबन है। और वाबन यहीं से आया था।

तो, यह बहुत ही रोचक है। यह वाबन नाम आज भी मौजूद है। मुझे लगता है कि आज भी वहाँ एक वाबन जलाशय और वाबन नाम की अन्य चीज़ें हैं।

और मेरा मानना है कि यह इस भारतीय से जुड़ा है कि एलियट एलियट के पहले धर्मांतरित लोगों में से एक थे और एक बहुत सम्मानित व्यक्ति थे। तो, ठीक है। तो, हमने इसके बारे में बात की, और मैं 1660 की ओर बढ़ना चाहता हूँ, जो नैटिक में चर्च था।

फिर उन्होंने इसे 14 गांवों तक विस्तारित किया, और अब गूकिन और इलियट चारों ओर घूमते हैं, और यह 1674 है। अब वह तारीख, 1675 एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख होने जा रही है। वह राजा फिलिप का युद्ध है।

1674 में किंग फिलिप के युद्ध से एक साल पहले, गूकिन और इलियट ने सभी 14 चर्चों और गांवों का दौरा किया, माफ़ करें, गांवों का। तो गूकिन, जो गांवों के ऊपर है, और इलियट 1674 में इन 14 भारतीय प्रार्थना करने वाले भारतीय गांवों का फिर से दौरा करते हैं। यहाँ उन 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गांवों का जश्न मनाने वाले कुछ संकेतों की एक छोटी वीडियो क्लिप है जो आज भी मौजूद हैं।

अगले साल और हमारा अगला सत्र 1675 में किंग फिलिप के युद्ध का परिग्रहण होगा। शहर में आगजनी के दौरान एक बड़ा सामूहिक हत्याकांड हुआ था। यह बसने वालों और भारतीयों के बीच एक भयानक संघर्ष था, और यह भयंकर और बहुत भयंकर था।

परिणामस्वरूप, बहुत नुकसान हुआ। ये 14 गांव खत्म होने जा रहे हैं, उनमें से कुछ तो ईसाई प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव हैं और कुछ और। और इलियट को फिर से सब कुछ शुरू करना होगा।

तो, हम यहीं समाप्त करेंगे, लेकिन चलिए एक सकारात्मक नोट पर समाप्त करते हैं। फिर, 1650 से इलियट, जिसमें नैटिक पहला शहर था, उन्हें 6,000 एकड़ जमीन दी गई, और 1674 तक प्रार्थना करने वाले भारतीयों के 14 गांव बन गए। यह आश्चर्यजनक है।

जॉन इलियट के काम के ज़रिए हज़ारों भारतीयों ने प्रभु को जाना। और अगली बार, हम सबसे पहले इलियट बाइबिल से शुरुआत करना चाहते हैं, जहाँ उन्होंने 1663 में बाइबिल का अल्गोंक्विन भाषा में अनुवाद किया था। फिर, हम किंग फिलिप के युद्ध, उस युद्ध के बाद की स्थिति और जॉन इलियट के जीवन के अंत पर नज़र डालेंगे।

फिर से, मुझे उम्मीद है कि आप भी मेरी तरह प्रेरित होंगे, जैसा कि मैंने 1600, 1640, 1650 में नैटिक के साथ और फिर 1674 तक, किंग फिलिप के युद्ध से ठीक एक साल पहले जॉन इलियट के काम से प्रेरित होकर देखा है और इंग्लैंड और भारतीयों के बीच उनका कितना जबरदस्त प्रभाव था और उन्होंने कितना अविश्वसनीय काम किया था। तो, एक और सत्र के लिए, मुझे उम्मीद है कि आप जॉन इलियट के जीवन पर अंतिम सत्र के लिए हमारे साथ शामिल हो सकते हैं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा जॉन इलियट, 1604-1690 भारतीयों के प्रेषित पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 2, वाबन विग्वम, अक्टूबर 1646 से नैटिक 1650 से 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय

गाँव, 1674 है।